भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

"तुलसीदास की सामाजिक दृष्टि"

गोस्वामी तुलसीदास ने अपनी रचना का मूल उद्देश्य 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' माना है। वे काव्य रचना को लोकमंगल का विधान करना मानते हैं और यह लोकमंगल का विधान तभी सम्भव है, जब समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना हो तथा उदात्त जीवन मूल्यों पर सबका ध्यान केन्द्रित हो। अपनी अमर कृति 'रामचरितमानस' में तुलसीदास ने रामकथा के माध्यम से आदर्श जीवन मूल्यों की स्थापना करने का प्रयास किया है। यही कारण है कि 'रामचरितमानस' में जीवन के विविध प्रसंगों का उल्लेख हुआ है तथा जीवन के किसी भी पक्ष की उपेक्षा नहीं हुई है। तुलसीदास एक ऐसी समाज व्यवस्था स्थापित करना चाहते थे, जो समाज एवं परिवार में नैतिक मूल्यों का आधार हो। इसे व्यवस्थित रूप में तभी लाया जा सकता है, जब परिवार और समाज का एक आदर्श रूप हमारे सामने उपस्थित हो। तुलसीदास एक ऐसे समाज की परिकल्पना कर रहे थे, जहाँ सभी सुखी हों, सभी सम्पन्न हों और सभी नीरोग हों। वे अपने चरितनायक 'राम' को एक आदर्श चरित्र के रूप में प्रस्तुत करते हुए लोकशिक्षा का विधान किया है। इसीलिए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने तुलसीदास को लोकनायक कहा है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, "लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके। तुलसीदास महात्मा बुद्ध के बाद भारत के सबसे बड़े लोकनायक थे। उनका सम्पूर्ण काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।" कवि तुलसीदास भारतीय जनता के प्रतिनिधि कवि कहे जा सकते हैं। उनकी दृष्टि अत्यन्त

विस्तृत एवं व्यापक थी। वे जहाँ एक और व्यक्तिगत साधना को महत्व देते हैं, वहीं दूसरी ओर लोकमंगल को भी उतना ही महत्व देते हैं। एक ओर तो वे व्यक्तिगत साधना मार्ग में विरागपूर्ण भक्ति का उपदेश देते हैं तो दूसरी ओर लोकपक्ष में आकर पारिवारिक एवं सामाजिक कर्तव्यों पर प्रकाश डालते हैं। तुलसीदास के काव्य में जो लोकमंगल का भाव विद्यमान है वह उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि से उद्‌भूत है। रामचरितमानस वे सभी सामाजिक सम्बन्धों का आदर्श रूप प्रस्तुत किया है। राम, भरत, लक्ष्मण, सीता, दशरथ, हनुमान् आदि अनेक पात्रों के माध्यम से उन्होंने 'आदर्श सम्बन्धों' की परिकल्पना को साकार में सफलता पाई है।

गोस्वामी तुलसीदास ने जिस युग में काव्य रचना की वह मुगलों का शासनकाल था। भारतीय समाज की पतनोन्मुख दशा का पता तुलसीदास के कलियुग वर्णन से चलता है। निम्नलिखित पंक्तियों के माध्यम से तत्कालीन दुरवस्था का वर्णन करते हुए तुलसीदास ने लिखा है—

"खेती न किसान को भिखारी को न भीख भलि,
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी।
जीविका विहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहें एक एकन सौं कहाँ जाइ का करी॥"

'रामचरितमानस' के उत्तरकाण्ड में तुलसीदास ने तत्कालीन सामाजिक स्थिति का अत्यन्त मार्मिक चित्रण किया है। वर्तमान भारतीय समाज में माता-पिता की आज्ञा का पालन पुत्र तभी तक मानता है, जब तक वह अविवाहित है। विवाह होते ही उसे ससुराल एवं ससुरालीजन प्रिय लगने लगते हैं और अपने ~~परिवार~~ परिजन शत्रु प्रतीत होने लगते हैं। इसका वर्णन तुलसीदास

ने इस प्रकार से रामचरितमानस में किया है —

"सुत मानहिं मातु पिता तब लौं।
अबलानन दीख नहीं जब लौं॥
ससुरारि पिआरि लगी जबतें।
रिपु रूप कुटुम्ब भए तबतें॥"

धर्म से विमुख लोग यदि सुख की आकांक्षा रखते हैं, तो वह असम्भव है। आज लोगों में अहं भाव इतना अधिक घर कर गया है कि वे अपने आप को सबसे ऊपर समझते हुए दूसरों को कोई भाव नहीं देते हैं। इस कलियुग में लोग बहन-बेटी की मर्यादा तक को भूल गए हैं —

"लघु जीवन संबतु पंच दसा।
कलपांत न नास गुमानु असा॥
कलिकाल बिहाल किए मनुजा।
नहिं मानत क्वौ अनुजा तनुजा॥"

कहीं भी संतोष और शीतलता नहीं है। सबके अन्दर ईर्ष्या, अहंकार, कठोर वाणी और लालच ने घर कर लिया है। परिवार और समाज विशृंखलित हो रहे हैं। तुलसीदास की मान्यता थी कि समाज का कल्याण तभी सम्भव है, जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपनी भूमिका का निर्वाह करे। तुलसीदास स्त्री को गृहलक्ष्मी एवं अन्नपूर्णा मानते थे तथा उसे परिवार एवं समाज की धुरी स्वीकार करते थे। उन्होंने अपनी सामाजिक आदर्श भारतीय संस्कृति की नींव पर खड़ा किया है। पत्नी धर्म का विवेचन करते हुए वे लिखते हैं —

"अमित दानि भर्ता बैदेही।
अधम सो नारि जो सेव न तेही॥
धीरज धर्म मित्र अरु नारी।
आपद काल परिखिअहिं चारी॥"

तुलसीदास ने पारिवारिक आदर्श प्रस्तुत

करते हुए विभिन्न पात्रों को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया है। सीता पतिव्रत धर्म का आदर्श प्रस्तुत करती हैं। राम आदर्श पुत्र का धर्म पालन करते हैं और पिता की आज्ञा पर मिलने वाले राज्य को त्यागकर वन गमन हेतु तुरन्त प्रस्तुत हो जाते हैं एवं कैकेयी से कहते हैं— "सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी।
जो पितु मातु वचन अनुरागी॥"

इस प्रकार तुलसीदास ने रामचरितमानस में कलियुग का वर्णन करते हुए तत्कालीन सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों का यथार्थ वर्णन किया है। तुलसी ने रामराज्य की परिकल्पना करते हुए आदर्श शासन व्यवस्था का प्रारूप प्रस्तुत किया है। आदर्श समाज कैसा होना चाहिए? तथा राजा और प्रजा के क्या कर्तव्य होते हैं, इस प्रारूप का वर्णन करते हुए वे लिखते हैं—

"दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज नहिं काहुहि व्यापा॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥"

तुलसीदास की मान्यता रही है कि आदर्श राजा की स्थिति मुख के समान होती है। वे लिखते हैं—

"मुखिया मुख सो चाहिए खान-पान में एक।
पालइ पोसइ सकल अंग तुलसी सहित विवेक॥"

तुलसीदास ने परिवार एवं समाज के विविध पक्षों के लिए जो आदर्श प्रस्तुत किया है वह अनुकरणीय है। इस सम्बन्ध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं कि "धर्म के इतने स्वरूपों की योजना, हृदय की इतनी उदात्त वृत्तियों की एक साथ उद्भावना तुलसी के ही विशाल मानस में सम्भव थी।" तुलसीदास ने अपने काव्य में व्यक्ति के लिए आवश्यक मानवीय गुणों का भी उल्लेख किया है। दया, क्षमा, परोपकार, करुणा, प्रेम, सहिष्णुता

भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

आदि गुणों से सम्पन्न व्यक्ति ही एक अच्छे आदर्श समाज का निर्माण कर सकता है। ईर्ष्या, द्वेष, कपट-दम्भ-वैर भाव से रहित मानव जिस समाज में रहते हैं, वह समाज अवश्य ही उन्नति करता है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी साहित्य के एक ऐसे कवि हैं जो अपनी काव्य रचना का मूल उद्देश्य समाज-कल्याण मानते हैं। वे रामचरितमानस में व्यक्ति धर्म, परिवार धर्म और समाज धर्म का विवेचन करते हैं। उनके अनुसार व्यक्ति धर्म से परिवार धर्म बड़ा है, तो परिवार धर्म से समाज धर्म एवं समाज धर्म से लोक धर्म बड़ा है। इसलिए तुलसीदास को भारतीय सभ्यता-संस्कृति का व्याख्याता कवि कहना अनुचित नहीं होगा, क्योंकि उनके जीवन मूल्य भारतीय परम्परा के अनुरूप हैं एवं भारतीय समाज में सर्वमान्य स्वीकृत हैं।

डॉ० राकेश कुमार
हिन्दी विभाग
शेरशाह महाविद्यालय, सासाराम, रोहतास